॥ॐ॥
॥श्री परमात्मने नमः ॥
॥श्री गणेशाय नमः॥

# ॥ अवधूताष्टकम् ॥

# विषय सूची

॥ अवधूताष्टकम् ॥ ..... 3

**भवदीय :**

**श्री मनीष त्यागी**

**संस्थापक एवं अध्यक्ष**
**श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन**

**www.shdvef.com**

**॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय: ॥**

॥ श्री हरि ॥
॥ श्री गणेशाय नमः ॥

# ॥ अवधूताष्टकम् ॥

अथ परमहंस शिरोमणि-अवधूत

श्रीस्वामीशुकदेवस्तुतिः

निर्वासनं निराकांक्षं सर्वदोषविवर्जितम् ।
निरालंबं निरातंर्क ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ १॥

मैं श्रीशुकदेवजीको प्रणाम करता हूँ. जिन्हें किसीभी प्रकारकी वासना नही है, किसीभी फलकी इच्छा नहीं है, जो संपूर्ण दोषोंसे रहित है, जिनका कोई आधार नहीं है, तथा जिन्सें किसीका भय नहीं है, और जो अवधूतरूप हैं.

निर्ममं निरहंकारं समलोष्टाश्मकांचनम् ।
समदुःखसुखं धीरं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ २ ॥

जिन्हें किसीभी वस्तु में ममता नहीं है, जो अहंकारसे रहित है, जिन्हें लोटा, पत्थर और कांचन एक समान प्रतीत होते हैं. जिन्हें सुख और दुःख समान है. ऐसे धीर अवधूत श्रीशुक मुनिको प्रणाम करता हूं ॥२॥

अविनाशिनमात्मानं ह्येकं विज्ञाय तत्त्वतः ।
वीतरागभयक्रोधं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ ३॥

विनाशरहित अद्वैत आत्माको यथार्थरूपसे जानकर, जिन्हें राग, भय और क्रोध नहीं है ऐसे अवधूत श्रीशुकदेवमुनिको मैं प्रणाम करता हूं ॥३॥

नाहं देहो न मे देहो जीवो नामहं हि चित्।
एवं विज्ञाय संतुष्टं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ ४ ॥

मैं न देहरूप हूँ, और न मेरी देह है, मैं जीव नहीं हूं मैं केवल चित्रूप हूं, ऐसा समझकर जो संतुष्ट हो चुके है ऐसे श्रीअवधूत शुकमुनिको मैं प्रणाम करता हूं ॥ ४ ॥

समस्तं कल्पनामात्रं ह्यात्मा मुक्तः सनातनः ।
इति विज्ञाय संतुष्टं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ ५ ॥

ये संपूर्ण विश्व कल्पनामात्र है, आत्मा कल्पनासे मुक्त सनातन स्थायी नित्य है, ऐसा समझकर जो तृप्त हो चुके है ऐसे श्रीअवधूत शुकमुनिको मैं प्रणाम करता हूं ॥ ५ ॥

ज्ञानाग्निदग्धकर्माणं कामसंकल्पवर्जितम् ।
हेयोपादेयहीनं तं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥६॥

ज्ञानरूपी अग्निसे जिन्हके संपूर्ण कर्म दग्ध हो चुके है, जो कामना और संकल्पसे रहित है, तथा जिन्हें किसी भी वस्तु के त्याग और ग्रहण की इच्छा नहीं है, ऐसे अवधूत श्रीशुकदेवमुनिको मैं प्रणाम करता हूं ॥६॥

व्यामोहमात्रविरतौ स्वरूपादानमात्रतः ।
वीतशोकं निरायासं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥७॥

स्वरूप (आत्मा) का ज्ञान हो जानेसे मोहकी निवृत्ति हो जानेपर जिन्हें किसी का शोक नहीं है, जो आयास (चेष्टा ) से रहित है, ऐसे श्रीशुकदेवमुनिको मैं प्रणाम करता हूं ॥ ७ ॥

आत्मा ब्रह्मेति निश्चित्य भावाभावौ च कल्पितौ ।
उदासीनं सुखासीनं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥८॥

आत्मा ब्रह्म है, और भाव तथा अभाव कल्पित है, ऐसा निश्चयरूपसे समझकर जो उदासीन और सुखी है उन्हें अवधूत श्रीशुकदेवमुनिको मैं प्रणाम करता हूं ॥ ८॥

खभावेनैव यो योगी सुखं भोगं न वांछति।
यदृच्छालाभसंतुष्टं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥९॥

जो योगी स्वभाव से ही सुख तथा भोगों की इच्छा नहीं करता है। तथा आकस्मिक लाभसे संतुष्ट रहता है ऐसे अवधूत को मैं प्रणाम करता हूँ ॥ ९ ॥

नैव निन्दाप्रशंसाभ्यां यस्य विक्रियते मनः।
आत्मक्रीडे महात्मानं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥१०॥

जिसका मन निन्दा और प्रशंसासे विकारको प्राप्त नहीं होता है, तथा जो आत्मा में ही क्रीडा करता है ऐसे महात्मा अवधूत श्रीशुकको मैं प्रमाण करता हूं ॥१०॥

नित्यं जाग्रस्थायां स्वमवद्योऽवतिष्ठते।
निश्चिन्तं चिन्मयात्मानं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥११॥

जो जाग्र अवस्था में भी स्वप्तके समान रहता है, ऐसे चिन्तासे रहित चितुरूपी अवधूत श्रीशुकदेवमुनिको मैं प्रणाम करता हूं ॥११॥

द्वेष्यं नास्ति प्रियं नास्ति नास्ति यस्य शुभाशुभम्।
भेदज्ञानविहीनं तं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥१२॥

जिन्हकी किसी से शत्रुता नहीं है, और जिनका कोई प्रिय नहीं है, तथा शुभ और अशुभ भाव नहीं हैं, जो भेदज्ञानसे रहित है ऐसे अवधूतको मैं प्रणाम करता हूं ॥१२॥

जडं पश्यति नो यस्तु जगत् पश्यति चिन्मयम्।
नित्ययुक्तं गुणातीतं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥१३॥

जो संसारको जड न समझकर चिन्मय देखता है, तथा जो नित्य युक्त (सहजावस्था ) है गुणों से परे है ऐसे अवधूतको मैं प्रणाम करता हूँ॥१३॥

यो हि दर्शनमात्रेण पवते भुवनत्रयम् ।
पावनं जंगमं तीर्थं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥१४॥

जो दर्शनमान्नसे तीनो भुवनको पवित्र करता है, ऐसे पवित्र करनेवाले जंगम तीर्थरूप अवधूत श्रीशुकदेवमुनिको मैं प्रणाम करता हूं ॥ १४॥

निष्कलं निष्क्रिय शांतं निर्मलं परमामृतम् ।
अनंतं जगदाधारं ह्यवधूतं नमाम्यहम् ॥ १५ ॥

कला और क्रियासे जो रहित है, तथा शांत, निर्मल और परम अमृत मोक्षरूप है, जिसका अंत नहीं है, जो संसारका आधार है ऐसे अवधूतको मैं प्रणाम करता हूं ॥ १५ ॥

हरिः ॐ तत्सत्-ॐ शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

॥ अवधूताष्टकं समाप्तम् ॥